"इन्चोली आश्रम"

–बबली, फरीदाबाद

लेख लिखना नहीं आता मुझे–लिखने बैठी हूं–क्योंकि याद आ रही है बीते दिनों की–घूम रहा है आँखों के सामने इन्चोली आश्रम – प्यारा प्यारा हमारा इन्चोली आश्रम–हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी इन्चोली में १०८ अखण्ड पाठ रखे गये। इस बार साथ में श्री तारतम पाठ की ४०० माला द्वारा अखण्ड पाठ हुये–साथ में श्री मेहर सागर की ४०० माला ८६४०० परिक्रमा हुई। गुरुवार २४-९-८१ प्रातः ९ बजे हमारा कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। दूर दूर से आये हुए थे सुन्दर साथ इस महायज्ञ में शामिल होने के लिए। इन्चोली आश्रम सजा हुआ था ट्यूब लाइटों और छोटे छोटे बल्बों से। निज मन्दिर में १८ सरूप साहिब सुन्दर सुन्दर रुमालों में पधराये गए। १०८ अखण्ड पाठ पढ़ने के लिए–मन्दिर सजा हुआ था फूलों से–घूम रहा है आंखों के सामने इन्चोली आश्रम–प्यारा प्यारा हमारा इन्चोली आश्रम।

इस महायज्ञ का प्रारम्भ धाम पन्ना से पधारे श्री जगतराज जी के कर कमलों द्वारा हुआ। १० दिन लगातार अखण्ड पाठ चलते रहे। हम सब सुन्दर साथ १० दिन वाणी का रस दिन रात लेते रहे। धन्य धन्य वह सुन्दर साथ जिन्होंने भाग लिया अखण्ड पाठ पढ़ने में। यह दिन थे हमारे कीमती। यह रातों का जागना–यह वाणी का पढ़ना– यह सुन्दर साथ का मिलाना–कैसे भूल जाऊँ इन्चोली आश्रम। इन्तजार है दिल को–कब आयेंगे यह दिन फिर—घूम रहा है आंखों के सामने इन्चोली आश्रम – प्यारा प्यारा हमारा इन्चोली आश्रम।

हर काम होता है इन्चोली आश्रम में अनुशासन से। सुबह घण्टी बजती थी ५ बजे आरती की। सब शामिल हो जाते थे आरती में–फिर ६ बजे शुरू होती थी परिक्रमा श्री मेहर सागर के पाठ की–एक घन्टे के लिए। ठीक सात बजे घंटी बजती थी नाश्ते की। ९ बजे होता था चर्चा का कार्यक्रम। वाणी की चर्चा मिलती थी सुनने के लिए श्री जगतराज जी के मुखार विन्द से। ११ बजे घंटी

Nijanand App

बजती थी भोजन की। मिलती थी रोज खीर खाने के लिए। क्या कहने इन्चोली आश्रम के। ठीक ३ बजे मिलती थी शाम की चाय। चाय के साथ मिलते थे समोसे–गुलाब जामुन खाने के लिए। धन्य धन्य वह सुन्दर साथ जिन्होंने की सेवा रसोई की। ४ बजे फिर परिक्रमा होती थी घंटे की—आनन्द मिलता था मेहर के सागर के पाठ करने में। ठीक ६ बजे होती थी संध्या आरती शुरू। साथ सब बैठ जाते थे मन्दिर में। यह पूर्ण ब्रह्म का बोलना, यह आरती का नजारा भूल नहीं सकता जो गया हो इन्चोली आश्रम में। आरती भोग के पश्चात् मिलता था भोजन पंक्ति में। फिर रात ९ बजे शुरू होती थी परिक्रमा १ घंटे के लिए। हर काम होता है इन्चोली आश्रम में अनुशासन से। घूम रहा है आंखों के सामने इन्चोली आश्रम–प्यारा प्यारा हमारा इन्चोली आश्रम।

लगती थी स्टेज रात की परिक्रमा के पश्चात् कार्यक्रम होते थे सब बढ़िया–एक से एक बढ़के। हाजिर रहते थे मंच मंत्री मुलख राज जी माईक ले के सूचनायें देने के लिए। पण्डाल भर जाता था गांव के सुन्दर साथ से। मिलते थे प्रो० प्रकाश जी के भजन सुनने को दर्द भरी आवाज में। आई हुई थीं दिल्ली से अमर ज्योति अपनी सुरीली आवाज ले के। क्या कहने मुजफ्फर नगर की कुमारी आशा के। रोज नये कार्यक्रम करती थीं। अपनी टोली को साथ ले के आई हुई थी रास मण्डली गुजरात से रास रचाने। कार्यक्रम होते थे रोज नये नये ढंग से। होते थे प्रवचन मेरे सतगुरु श्री जगदीश चन्द्र जी आहूजा के मुखार विन्द से। घूम रहा है स्टेज आंखों के सामने प्यारा प्यारा हमारे इन्चोली आश्रम का स्टेज।

कुरबानी उनकी जिन्होंने की सेवा इन्चोली आश्रम में। रसोई वाले लगे रहे दिन रात दाल चावल सब्जी खीर बनाने में। तंदूर वाले लगे रहे दिन रात रोटियां बनाने में। कई सुन्दर साथ हाजिर रहते थे भोजन परोसने में। मिलता था खाना पका पकाया खाने को। नहाने के लिए बने हुये हैं बाथरूम। नहाओ–धोओ कपड़े जितने मर्जी पानी से। बनी हुई हैं फ्लैश की टट्टियां सुन्दर साथ के आराम के लिये। मन्दिर के दोनों तरफ बने हुए हैं कमरे साथ के रहने के लिये। कितना मेहरबान है धनी हम सब पर। ये बड़े आराम इन्चोली आश्रम में। घूम रहा है आंखों के सामने इन्चोली आश्रम – प्यारा प्यारा इन्चोली आश्रम।

समाप्ति पूजन का नजारा था देखने योग्य। ३–१०–८१ को समाप्ति पूजन हुआ श्री मेहर सागर की ४०० माला दण्डवत प्रणाम के साथ। जब तक दण्डवत परिक्रमा होती रही। कई सुन्दर साथ

Nijanand App

मन्दिर के आगे खड़े होकर दो चौपाइयों का गायन करते रहे।

दई प्रदखिणा अति घणी,
करूँ दण्डवत प्रणाम।
सहु साथना मनोरथ पूरजो,
मारा धणी श्री धाम॥

मनना मनोरथ पूरण कीधां,
मारा अनेक वार।
वारणे जाय श्री इन्द्रावती,
मारा आत्मना आधार॥

इसके बाद निजानन्द आश्रम ट्रस्ट रजिस्टर्ड इन्चोली के अध्यक्ष कीकू भाई और मेरे सतगुरु जगदीश चन्द्र आहूजा जी ने सब सुन्दर साथ का पूजन किया। सबके चरणों को छू कर प्रणाम किया। फिर सब सुन्दर साथ को दण्डवत प्रणाम किया। इस दृश्य को देख कर सुन्दर साथ का दिल जोर जोर से रोया। सब सुन्दर साथ निज मन्दिर में एकत्रित हुये – जहाँ १८ सरूप साहिब पधराये हुये थे। समाप्ति पूजन हुआ श्री तारतम पाठ की ४०० माला के अखण्ड पाठ एवं श्री १०८ अखण्ड पाठ का। कोई सुन्दर साथ ऐसा न था जिसका दिल न रोया हो–धनी को पुकार कर। सब की पुकार थी–हमारे गुनाहों पापों को माफ कर इस खेल को खत्म करो। हमें निज घर ले चलो। उस समय का नजारा–क्या वर्णन करूँ इस जुबाँ से– घूम रहा है आँखों के सामने सुन्दर साथ का रोना–यह खेल जुदायी का।

समाप्ति पूजन के अगले दिन ४-१०-८१ को एक महान शोभा यात्रा (जलूस) निकला खतौली नगर में जो खतौली नगर से मुजफ्फर नगर चुंगी से चलकर नगर महापालिका के बड़े मैंदान में समाप्त हुआ। हम सब सुन्दर साथ इन्चोली से बसों द्वारा खतौली में एक अस्पताल के सामने बड़े मैंदान में इकट्ठे हुये। सायं ४ बजे हमारा जलूस शुरू हुआ। जलूस में थे शामिल बड़े बड़े हाथी, घोड़े–हाथियों पर विराजमान थे–हमारे संत-महाराज तरह तरह की झाकियों से हमारे इस जलूस की शोभा थी देखने योग्य। बैण्ड बाजों का तो कहना ही क्या। सड़क पर आने जाने वाले लोग हमारे जलूस को देख कर रुक गये और देखते ही रह गये। श्री राजी महाराज की सवारी के साथ साथ कई सुन्दर साथ चल रहे थे। सब सुन्दर साथ ने मिलकर भजन गाये। हम सब पहुंचे नगर पालिका के बड़े मैंदान में। वहाँ आम सभा हुई। खतौली शहर के लोग वहाँ आये इस आम सभा में शामिल होने श्री राम रतन मंत्री यू० पी० डब्लू० डी० सरकार हमारे मुख्य अतिथि थे। फूलों के हार के साथ हमारे श्री निजानन्द आश्रम ट्रस्ट रजिस्टर्ड इन्चोली के सदस्यों ने उनका स्वागत किया। नया गाँव सुन्दर साथ के भजनों के साथ

Nijanand App

हमारा कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ—दिल्ली से आई हुई थी अमर ज्योति और रीना—यह थे रेडियो स्टेशन के मुख्य संगीतकार—उनके कार्यक्रम के बाद प्रणामी समाज के इलाहाबाद से पधारे विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रमुख श्री जैसवाल जी के प्रवचन हुए। फिर मेरे सतगुरु जी के भी प्रवचन हुए जिसमें उन्होंने आम दुनियाँ को समझाया—परमात्मा एक है—हिन्दू मुसलमान—दोनों का भगवान खुदा एक है। मेरे सतगुरु के प्रवचन सुनकर रामरतन जी ने अपने भाषण में कहा कि मैंने ऐसा ज्ञान जिन्दगी में पहली बार सुना है। प्रणामी धर्म ही एक ऐसा धर्म है जो सब ग्रन्थों को मिलाकर एक खुदा—एक परमात्मा की पहचान करवाता है। उन्होंने कहा कि जब भी समाज को मेरी जरूरत पड़ेगी—मैं हर तरह से तन मन धन न्यौछावर करने के लिए तैयार हूँ। हमारा कार्यक्रम समाप्त हुआ—हम बसों द्वारा वापिस आश्रम पहुँचे—घूम रहा है आँखों के सामने जलूस।

अगले दिन सोमवार ५-१०-८१ प्रातः ८ बजे परमहंस महाराज श्री रामरतन दास जी की पुण्य स्मृति में एक अखण्ड पाठ प्रारम्भ हुआ। फिर ९ से १२ बजे और रात्रि ९ से १२ बजे लगी धार्मिक सभा - जिसमें हुए तरह तरह के कार्यक्रम। मंगलवार ६-१०-८१ को प्रातः ८ से १२ बजे तक एक धर्म गोष्ठी हुयी। परमहंस महाराज श्री राम रतन जी की पुण्य स्मृति में मेरे सतगुरु जगदीश चन्द्र आहूजा जी ने वाणी की चर्चा की। यह वाणी की कीमत यह आत्म का जागना होती है यह जागृत वाणी की पुकार से। कई सुन्दर साथ ने स्टेज पर आकर श्री राम रतन महाराज की पुण्य स्मृति में अपने विचार प्रकट किए। प्रो० प्रकाश, अमर ज्योति, कुमारी आशा हमारे संगीत कलाकारों ने विरह के भजन सुनाए। घूम रहे हैं आँखों के सामने शेरपुर वाले महाराज जी - प्राणों के नाथ हमारे—आशिक रुहों के।

बुधवार ७-१०-८१ प्रातः ८ बजे हुआ अखण्ड पाठ का समाप्ति पूजन। सबने आरती की। कोई ऐसा सुन्दर साथ नहीं था जो आरती में न शामिल हुआ हो। फिर ९ बजे श्री जी की सवारी का आश्रम प्रांगण में जलूस निकला। सब सुन्दर साथ मिलकर नाचे - भजन गाये। सबको खूब आनन्द मिला। जो भी गया इन्चोली वह ना लौटा कभी खाली। इसके बाद ध्वजारोहण हुआ। उस समय का दृश्य था देखने योग्य। यह सुन्दर साथ का मिलावा - इस भण्डारे में हर शहर अमृतसर, जालन्धर गुजरात, कानपुर, इलाहाबाद, लखनऊ, मुजफ्फरनगर, जयपुर से प्रणामी समाज के सुन्दर साथ शामिल थे। गाँव के सुन्दर साथ ने भी भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किया। ❖

Nijanand App